श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १

जून-२०१६
गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. श्रावक कुल में जन्म लेने से श्रावक जन्मयोग्य जीवन में करने योग्य ..... की बात जन्म कृत्य में बतायी है ।
२. सर्व धर्म के कृत्य सम्यक्त्व द्वारा ..... किये बिना एक भी धर्म के कृत्य शोभा नहीं देते ।
३. ये पाँच नमस्कार इस भूमितल पर ..... रुप है ।
४. मनोवर्गणा ..... होने से सूक्ष्म परिणामी कहलाती है ।
५. जब तक सूर्य उगता नहीं तब तक ही ..... प्रकाश कर सकते हैं ।
६. श्रावक जब तक यह जयणा जानते नहीं तब तक धर्मक्रिया करते हुए भी ..... को पाता नहीं ।
७. अनेकानेक विविध प्रकार के पदार्थ ..... रहे हुए है ।
८. दिक्पाल, क्षेत्रपाल आदि की भक्ति करके उनको ही मुक्ति देने वाला मानना यह ..... मिथ्यात्व जानना ।
९. दोनो हाथों में मजबूत ..... रुप ऐसे उपाध्याय भ. को नमस्कार हो ।
१०. ..... याने आत्मा के साथ कम या ज्यादा कर्म दलिकों का जुडना ।
११. वीर प्रभु की ..... निष्फल गई फिर प्रभु वहाँ से विहार कर के महसेन उद्यान में पधारे ।
१२. मुख्य कुंडो की गिनती ..... में की गई है ।
१३. आत्मा के अनन्तवीर्य गुण को आवृत करे वह ..... है ।
१४. हमारे जीवन की ..... का मूल इस जयणा की न्यूनता है ।
१५. ..... साधु दुसरो के गुणों को सहन नहीं करें ।
१६. अनंत आकाशास्तिकाय रुप ..... है ।
१७. वप्रोपरि ..... पिधानं देहरक्षणे ।
१८. पाप का नाश करने वाली और पुण्य का उपार्जन करानेवाली यह ..... होती है ।
१९. साधु साध्वी का मलिन शरीर देखकर दुगंच्छा की हो तो ..... नाम का अतिचार जानना ।
२०. मुझसे इनके ..... के अभिमान को सहन किया जा सके ऐसा नहीं है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. खरगोश किसकी केशराशी काटने की तैयारी कर रहा है ?
२. किसी भी कार्य का प्रारंभ किससे होता है ?
३. नवकार मंत्र किसे रखने के लिये अंगारो की खाई रुप है ?
४. सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाली सर्व भव्यात्मा कौनसा ग्रंथ पढने के अधिकारी है ?
५. श्री जिन प्रणीत धर्म का मूल क्या हैं ?
६. गुरु की देशना सुनकर भी जिसका चित्त स्थिर रहता नहीं वे कैसे श्रावक कहे जाते है ?
७. व्यंतर, मनुष्य, तिर्यंच जिस लोक में बसते है वह किस आकार का है ?
८. इन्द्रभूति के मन में कौन सी शंका घर कर गई थी ?
९. विरती रुप रथ का सारथी कौन है ?
१०. आत्मा द्वारा बँधा हुआ कर्म आत्मा के किसी न किसी गुण को ढंकता है, उस कर्म के स्वभाव को क्या कहते है ?
११. चातुर्मास यह किसका काल है ?
१२. धातकीखंड के चारों और कौनसा समुद्र है ?
१३. पंच परमेष्ठी के पदो में से उत्पन्न हुई रक्षा किसका नाश करने वाली है ?
१४. कर्म बंध का दूसरा हेतु या कारण क्या है ?
१५. कृष्ण महाराजा का समावेश कौनसे श्रावक में होता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. पइदि २) समासओ ३) खातिका ४) वुच्छं ५) तिविहो ६) कहं-चिट्ठे ७) ज्ञेयं ८) पव्वय ९) तस्य १०) आवृतश्च
११. अडवन्न १२) विग्घं १३) बहिः १४) कथिता १५) एगंपि १६) सव्वति समाणे १७) पिंडेसिं १८) इयं
१९. भन्नए २०) समायारी

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) प्रतिक्रमण	१) हरिवर्ष
२) इन्द्रभूति	२) अलोक
३) चौद पूर्वधारी	३) क्रिया
४) कांक्षा	४) स्वाध्याय
५) अकर्मभूमि	५) मिथ्या आडंबर
६) कार्मण वर्गणा	६) वादी मुखभंजन
७) अपापा नगरी	७) पाखंडी दर्शन
८) आकाशास्तिकाय	८) आहारक शरीर
९) श्रद्धा	९) यज्ञ
१०) अहाछंद	१०) लोहाग्नि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. जंबुद्वीप के आजुबाजु रहा लवण समुद्र कितने योजन प्रमाण वाला है ?
२. वज्रपंजर स्तोत्र में कितने पदो से अपने देह और आत्मा की रक्षा जोडने में आई है ?
३. वीर प्रभु के प्रथम सवसरण में कितने इन्द्र वहाँ आये थे ?
४. संपूर्ण श्रावक जीवन का रहस्य प.पू. रत्नशेखरसूरिजी ने कितने द्वारों से बताया है ?
५. लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व में कितने प्रकार के द्रव्यलिंगी बताये है ?
६. अलग अलग मोदक बनाते समय कितनी चीजें निश्चित हो जाती है ?
७. इन्द्रभूति के शिष्यो ने कितने उपनामो से उनकी बिरुदावली गाई है ?
८. कितने तत्वों पर मन में संदेह रखने से शंका नामक अतिचार लगता है ?
९. जंबुद्वीप में मुख्य कितने पदार्थो का संग्रह संग्रहणी है ?
१०. अंतराय कर्म के भेद कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सूंठ के मोदक स्वभाव से कफ को दूर करते हैं ।
२. अपरपरिगृहित जिनबिंब का पूजन करना लोकतर देवगत मिथ्यात्व कहलाता है ।
३. उर्ध्वलोक सात रज्जु से कुछ अधिक है ।
४. एक भी शल्य शरीर में रह जाये तो प्राणों का हरण करनेवाला साबित होता है ।
५. पंचपरमेष्ठी से उत्पन्न हुई रक्षा करके की गई साधना निर्विघ्न बनती है ।
६. मालवदेश के पंडित तो मेरे से भयभीत हो त्रासित हो उठे ।
७. गीतार्थ की बात न समझे न स्वीकारे वह श्रावक खीले के समान जानना ।
८. मैं जिनेश्वर प्रभु की नित्य त्रिकाल पूजा करुंगा ।
९. जंबुद्वीप की नदियों में उतरने के बडे उतार स्थान तीर्थ कहलाते है ।
१०. समान प्रदेशो के बने स्कंध समुह को वर्गणा कहते है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. इन तीन तत्वों पर श्रद्धा रखना वो समकित कहलाता है ।
२. अपने आप को सर्वज्ञ मनवाने वाला यह कोई महान धूर्त है, प्रपंच का घर है ।
३. कर्म कैसे कैसे अलग अलग प्रकार के हैं और वे कैसा कैसा फल देते है ।
४. जहाँ के पुद्गलों के परिणाम हलके होते हैं, अतः उसे अधोलोक भी कहते हैं ।
५. ये पाँच नमस्कार इस भूमितल पर वज्रमय शिलारुप है ।
६. परमात्मा के बताए हुए शास्त्र सिध्दांत पर अतूट श्रद्धायुक्त समकित धारी श्रावक का इसमें समावेश होता है ।
७. सारे तीर्थों में सदा ब्रम्हचर्य व्रत पालूंगा तथा नवकारसी चौविहार करुंगा ।
८. तर्कशास्त्र में मुझे कोई लांघ शके ऐसा नहीं है ।
९. मोदक के आकार में विविधता देखने मिलती है, छोटे मोदक, मध्यम मोदक और बडे मोदक जिनका वजन भिन्न भिन्न होता है ।
१०. उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य इस त्रिगुणात्मक छः द्रव्यों का जहाँ अवस्थान है वह लोक है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जंबुद्वीप में रहे दस पदार्थो का संक्षिप्त स्वरुप समझावो । २) समकित किसे कहते हैं ? जिनेश्वरो ने धर्म का मूल सम्यक्त्व क्यों कहा है ? ३) कार्मण वर्गणा कर्म कैसे बनती है ४) श्रावक किसे कहते हैं ?
५. पंच परमेष्ठी के पाँच पंदो से उत्पन्न रक्षा समझाओ ।

જવાબ પત્ર નીચે ના સરનામે મોકલશોજી
શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪ ૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪
સાચા પરિણામ અને સાચા ઉત્તર માટે વેબ સાઈટ www.shatrunjayacademy.com